कार्यालय आयुक्त उच्च शिक्षा म0प्र0
सतपुड़ा भवन, भोपाल

गुणवत्ता वर्षः सत्र 2011–12 – दृष्टि पत्र

विस्तृत दिशानिर्देश

सबसे पहले आप अपना 'स्वॉट' (SWOT) विश्लेषण करें। इसके बाद आप अपनी शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों और खतरों, को ध्यान में रखते हुए एक सुविचारित, व्यवहारिक और स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मिल–बैठ कर योजनाएं तैयार करें। किसी भी योजना को थोपें नहीं। सभी मिशन भावना से काम करें और प्रत्येक कार्य में अपना दिल जोड़े।

अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के संचालन के लिए आवश्यक विभिन्न समितियों और क्लबों का गठन करें और व्यक्तियों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए उनके संचालन हेतु सदस्यों को नियुक्त करें। यथासंभव इनमें विद्यार्थियों को उनसे अपनी–अपनी रूचि के अनुसार जोड़े।

राष्ट्रीय सेवा योजना के अंर्तगत पर्यावरण, कैंपस की साफ–सफाई, देश प्रेम आदि से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को नियमित संचालित करें। साक्षरता, महिला सशक्तिकरण, लिंग–भेद, नशा–मुक्ति आदि जैसे मुद्दों के महत्व से विद्यार्थियों को परिचित कराते हुए विस्तार गतिविधियों को अंजाम दे। महाविद्यालय में 'रेड रिबन क्लब' और 'युवा रेडक्रास' को सक्रिय करें और विद्यार्थियों को प्रेरित कर जोड़ें ताकि वे एच.आय.वी. संक्रमण और एड्स जैसी गंभीर बीमारियों के बारे में लोगों को अवगत करा कर जागरूकता लाने में जुट सकें।

अपने 'स्वॉट विश्लेषण' को ध्यान में रखते हुए नवाचार करें। जन भागीदारी समिति को विश्वास में लेते हुए आवश्यक सहयोग लें। समिति के सदस्यों को बताएं कि आज के इस वैश्वीकरण के माहोल में विद्यार्थियों को मानवीय संवेदनाओं से युक्त गुणात्मक, नैतिकता और राष्ट्रीय भावना से भरपूर लेकिन रोजगारोंमुखी प्रेरक शिक्षा की कितनी आवश्यकता है और इसमें उनकी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है?

इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास और विस्तार की दिशा में सोचें

आज जल समस्या गंभीर समस्याओं में से एक है। इससे निपटने के लिए बारिश के पानी को संग्रहित कर संरक्षित करने के उद्देश्य से योजना बनाएं। केम्पस की सुरक्षा का बंदोबस्त करें। जनभागीदारी समिति और जिला योजना से मिल कर निर्माण कार्य कराएं। बिजली की समस्या से निपटने के लिए इंवर्टर से सभी कक्षों में आपाती प्रकाश व्यवस्था करें तथा खराब हो रहे बल्बों को सी. एफ. एल. से बदलें। कम्प्यूटर के सहयोग से शिक्षण–प्रदाय सुविधा विकसित करें व ब्राडबैण्ड की सुविधा लेते हुए **इंटरनेट से ज्ञान–प्राप्ति** के मार्ग को प्रशस्त करें व शिक्षकों और विद्यार्थियों को जोड़ें। क्रीड़ा गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएं विकसित करें।

विद्यार्थियों और शिक्षकों में पढ़ने की आदत विकसित करने की दिशा में सोचें

विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान की बढ़ाना है। अतः सामान्य ज्ञान वृद्धि की योजना पर कार्य करना आरंभ करे। विद्यार्थियों की अखबार पढ़ने की आदत बढ़ाने तथा उनमें रूचि जाग्रत करने और सूचनाओं के महत्त्व को प्रतिपादित करने के उद्देश्य योजना बनाएं। पुस्तकालय में **'रीडिंग और मोटिवेशन स्पेस'** का सृजन करें। महीने में एकबार **'सामान्य ज्ञान परीक्षा'** का आयोजन करे।

विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए वाचनालय के सूचना पटल पर दैनिक अखबारों में छपी किसी खबर पर आधारित एक प्रश्न चस्पाएं। विद्यार्थियों को इसके उत्तर लिख कर एक डिब्बे में डालने हेतु प्रेरित करें। अगले दिन लाटरी सिस्टम से सही उत्तर देने वाले किसी एक विद्यार्थी को पुरस्कृत करें।

एक अन्य नवाचार के अंतर्गत शिक्षक कक्षा में पढ़ाना आरंभ करने के पूर्व ससंदर्भ एक समाचार विद्यार्थियों को सुना सकते हैं। शिक्षक स्वयं नया जानने और करने के प्रति उत्सुक रहें तथा नए रूचिकर तरीकों से पढ़ाने के बारे में सोचें।

भाषा–सुधार को अभियान की तरह लें

आज कुछ विद्यार्थियों में भाषागत कमजोरियां है। इन्हें दूर करने के लिए दूसरों को दोष देने के बजाए अपने स्तर पर ध्यान देना शुरू करें। इसे एक अभियान की तरह मिशन भावना से लें। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत आवेदनों की गलतियों को ठीक कर उन्हें दोबारा सही कर प्रस्तुत करने को कहें।

खाली कक्षाओं को उत्पादक कक्षाओं में बदलें

प्रायः देखा गया कि जब भी कोई शिक्षक अवकाश पर रहता है, विद्यार्थीगण उस कक्षा के समय का उपयोग नहीं कर पाते हैं। इससे अनुशासन तो बिगड़ता ही है, विद्यार्थियों के पालकों को भी महाविद्यालयों में पढ़ाई नहीं होने की शिकायत रहती है। इस स्थिति से निपटने के लिए खाली कक्षाओं को उत्पादक कक्षाओं में परिवर्तित करने के उद्देश्य से **प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से कक्षा अध्यापन कराने की एक अनूठी योजना** आरंभ की जा सकती है। अपनी इच्छा से पढ़ाने में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को चयनित कर उन्हें अपनी रूचि के विषयों पर व्याख्यान हेतु सामग्री तैयार करने को कहा जा सकता है। संबंधित शिक्षक द्वारा सामग्री जांचने के बाद उन्हें पॉकेट डायरी रखने और उसमें इसे बिंदुवार लिखने की सलाह दी जा सकती है। फिर जो भी शिक्षक अवकाश के लिए आवेदन करे, उससे अपेक्षा की जा सकती है कि वह आवेदन में उस विद्यार्थी का नाम भी बताए जो उसके स्थान पर कक्षा को लेगा। कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से उसके पढ़ाने के कौशल पर फीडबैक देने हेतु कहा जा सकता है। श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत करने की घोषणा भी की जा सकती है।

समाज सेवा से जोड़ने के लिए **'कक्षाओं को सोशल एक्टिविटि क्लब'** के रूप में भी प्रतिष्ठित किया जा सकता है। कक्षा के विद्यार्थी अपनी रूचियों को ध्यान में रखते हुए समाज–सेवा एवं महाविद्यालय में जिम्मेदारी निभाने के उद्देश्य से कुछ योजनाएं तैयार कर सकते हैं और खाली समय की उपलब्धता के अनुसार अपनी योजना को सफल बनाने की दिशा में कार्य कर सकते हैं।

वृक्षारोपण और गोद लेने का कार्यक्रम

आज पर्यावरण संकट को सभी गहराई से महसूस करते हैं। सब इसके कारणों में विकास के नाम पर वृक्षों की अंधाधुंध कटाई को मानते हैं। वृक्ष हमारी संस्कृति के सूचक हैं और इसीलिए वृक्षों का विनाश हमारी संस्कृति के विनाश का भी सूचक है। अतः अपनी संस्कृति को बचाने के लिए सभी को वृक्षारोपण जैसे पुनीत कार्य में लगना होगा। इसे हमें एक संस्कार के रूप में अपनाना होगा।

शासन के निर्देशानुसार वृक्षारोपण के कार्यक्रमों का आयोजन हर साल किया जाता है। लेकिन अक्सर देखने में आता है कि जिस उत्साह से वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न होता है, उसके रख–रखाव के प्रति उतनी ही उदासीनता बरती जाती है। इसलिए वृक्षारोपण के दौरान ही विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को पौधों को गोद लेने हेतु प्रोत्साहित करें और सतत मॉनिटरिंग करें।

अध्यापन के तरीकों में बदलाव करें ताकि विद्यार्थियों में रूचि पैदा हो

शिक्षक अपने अध्यापन के तरीकों में बदलाव करें। वे अपने विषय के फ्लो चार्ट बनाएं। इससे न सिर्फ कक्षा–अध्यापन रूचिकर बनेगा, वरन् विद्यार्थियों को भी विषय को समग्र रूप में समझने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों और शिक्षकों को '**पांच–रंगों वाली पॉकेट डायरी**' रखने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसमें अलग–अलग रंगों के पन्नों का उपयोग अपनी–अपनी रूचि को ध्यान में रख कर विषय–विभाजन हेतु किया जा सकता है। डायरी अतिरिक्त स्मृति के साथ ही समय के उपयोग का कारगर साधन साबित हो सकती है।

शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों की मानसिक उपस्थिति में वृद्धि के उपाय करें

कक्षा में विद्यार्थियों की मानसिक उपस्थिति को बनाए रखने के लिए कक्षा समाप्ति के 5 मिनट पूर्व सभी शिक्षक पढ़ाये गए विषय पर आधारित एक–एक वस्तुपरक प्रश्न पूछ सकते हैं। माह के अंत में लाटरी सिस्टम से किसी एक विद्यार्थी को पुरस्कृत करने की घोषणा कर सकते हैं।

साफ–सफाई एवं टूट–फूट की सूचना और क्रियांवयन रजिस्टर का संधारण करें

प्राचार्य महाविद्यालय में साफ–सफाई एवं टूट–फूट की सूचना प्राप्त करने में सभी लोगों का सहयोग लेने हेतु सूचना और क्रियांवयन रजिस्टर की व्यवस्था करें। सभी से इसमें सहयोग की अपील करें। कार्यालय अधिकारी इस पर त्वरित कार्रवाई के लिए संबंधित को समय–सीमा में कार्य संपादित करने हेतु जिम्मेदारी तय करें। स्वच्छ पेय–जल की व्यवस्था सुनिश्चित करें। पर्यावरण को शुद्ध रखने की दृष्टि से टायलेट और पेशाबघर की रोजाना दो या तीन बार सफाई की नियमित व्यवस्था करें। आज के ऊर्जा–संकट के दौर में बिजली का अपव्यय आपराधिक ही माना जाना चाहिए। अतः प्रचार्य महाविद्यालय में बिजली–बचत हेतु सभी को समझाईश देने के साथ ही अपने अपने स्तर पर इस अभियान में जुटने को कहें। आग्रह करें कि जब किसी को भी कहीं अनावश्यक पंखा चलता हुआ अथवा बल्ब जलते हुए दिखे, वह उसे बंद कर दे।

अभिव्यक्ति प्रोत्साहन कार्यक्रम को शुरू करें

सामान्यतः विद्यार्थियों में व्यवहार कौशल के विकास की और संवाद कला को निखारने की आवश्यकता होती है। अतः समय सारणी में **राष्ट्र गीत** और **मध्यप्रदेश गान** के बाद के आधे घंटे को

अभिव्यक्ति प्रोत्साहन कार्यक्रम के लिए आवंटित किया जा सकता है। इसमें विद्यार्थियों को रेंडमली आमंत्रित कर महाविद्यालय के बारे में कुछ बोलने अथवा किसी प्रेरक प्रसंग को सुनाने हेतु कहा जा सकता है। आरंभिक झिझक के बाद विद्यार्थी इसमें रूचि लेना आरंभ कर देंगे। कार्यक्रम के अंत में प्रत्येक दिन श्रेष्ठ वक्ता और श्रोता को पुरस्कार देने की घोषणा की जा सकती है।

अंतर्विधा मंच की स्थापना करें

अपने–अपने विषयों को ले कर शिक्षकों के बीच व्याप्त दीवारों को तोड़ने और सभी विषयों से परिचित कराने के उद्‌देश्य से अंतर्विधा मंच की स्थापना की जा सकती है। इसमें सप्ताह में एक दिन एक शिक्षक को अपने विषय से संबंधित एक सेमीनार देना होगा जिसमें स्टॉफ के अन्य सभी शिक्षक बैठेंगे। शिक्षक सेमीनार में विषय की तकनीकी शब्दावली से बचाते हुए सामान्य–जन की भाषा में अपने विषय के महत्त्व को प्रतिपादित करने के अद्‌देश्य से रूचिकर भाषा में प्रस्तुती करे।

मोटिवेशन हेतु कार्यक्रमों का आयोजन

प्राचार्य एवं स्टॉफ के सदस्य नियमित मोटिवेशन कक्षाओं का आयोजन करें। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ने के उद्‌देश्य और लाभों से परिचित कराते हुए उनके समूचे व्यक्तित्व–विकास पर ध्यान दिया जा सकता है। प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से उन्हें जीवन में कुछ बनने और अपने जीवन को सार्थक बनाने हेतु आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन दिया जा सकता है। साल में तीन या चार बार विद्याार्थियों की विशिष्ट विद्वत्जनों की विद्यार्थियों से बातचीत कराने पर भी जोर दिया जा सकता है।

विद्याार्थियों के मनोबल को बढ़ाने एवं उन्हें प्रेरित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करने का तय किया जा सकता है। हमारे आसपास विज्ञान मौजूद है। दैनिक क्रिया–कलापों में विज्ञान शामिल है, लेकिन हम उनसे अक्सर अनभिज्ञ रहते हैं। वैज्ञानिक जागरूकता और दृष्टिकोण को विकसित करने के उद्‌देश्य से विज्ञान दिवस मनाएं। आज विकराल रूप धारण कर रही पर्यावरणीय समस्या को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय में पर्यावरण चेतना और जागरूकता को ले कर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करें। इनमें हरियाली महोत्सव, विश्व जल दिवस, अर्थ ऑवर, पृथ्वी दिवस आदि जैसे आयोजनों को वृहद स्तर पर आयोजित करें। इसके अलावा स्वास्थ के प्रति जागरूकता, राष्ट्रीय भावना जगाने और नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिये विभिन्न आयोजन भी करें। इनमें स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस समारोहों के अलावा प्रमुख हैं : पोषण आहार सप्ताह, यातायात और स्वच्छता सप्ताह, एड्स दिवस, विश्व युवा दिवस, शिकागों में स्वामी विवेकानंद का व्याख्यान स्मृति दिवस, हिंदी दिवस, युवा उत्सव, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, नियमित राष्ट्रगान और मध्यप्रदेश गान का आयोजन, वार्षिक स्नेह सम्मेलन, सामुहिक सूर्य नमस्कार कार्यक्रम, विधिक साक्षरता शिविर आदि।

कई दिवसों को आयोजित करने में विज्ञान भारती, म.प्र. विज्ञान और तकनीकी परिषद तथा म.प्र. विज्ञान सभा, विश्व प्रकृति निधि जैसी संस्थाओं का सहयोग लें एवं विद्यार्थियों को पुरस्कृत करें।

कम्प्यूटर जागरूकता लाने हेतु प्रयास करें

विशेषकर कस्बाई महाविद्यालयों में यह समस्या अधिक है। इन महाविद्यालयों में पढ़ रहे अधिकांश विद्यार्थी मानते हैं कि कम्प्यूटर चलाना कठिन इसलिए है कि वे उसकी भाषा नहीं समझते। लेकिन घबराने से बात नहीं बनती। सीखने की चाह हो तो कुछ भी पाना असंभव नहीं होता। यह

निर्विवादित वास्तविकता है कि कम्प्यूटर ज्ञान के बिना आज सफलता की संभावना कोरी कल्पना है।

जागरूकता लाने के लिए विद्यार्थियों से कहें कि जब आप मोबाईल का इस्तेमाल कर सकते हैं तो कम्प्यूटर का क्यों नहीं? किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए संकल्पित और अंदर से मजबूत होना जरूरी होता है। जैसे–जैसे विद्यार्थियों में रोमांच जगने लगेगा, वैसे–वैसे वे सीखना शुरू करेंगे। उन्हें एम.एस. वर्ड, एम.एस. पॉवर पॉईंट, एम.एस. एक्सेल आदि के बारे में बताते हुए इनके अनुप्रयोगों के साथ ही इंटरनेट से लाभ लेना भी सिखाएं। शुरूआत भलेही कुछ विद्यार्थियों से हो, लेकिन फिर संदेश फैलेगा और कार्य आसान होता चला जाएगा।

स्वरोजगार को प्रेरित करने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करें

आज विद्याार्थियों के पास डिग्रियाँ होने के बावजूद संवाद, भाषा एवं व्यक्तित्व कला का अभाव है। विषय के ज्ञान के अतिरिक्त किसी न किसी हुनर का होना भी आवश्यक है। अच्छे रोजगार के लिए अपनी योग्यता सिद्ध करना पड़ती है। सुन्दर, आकर्षक और सौम्य व्यक्तित्व, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता, व्यवहार कुशलता, स्पष्ट दूर–दृष्टि तथा हिंदी और अंग्रेजी में संवाद करने का कौशल कॅरियर की सफलता में अहम् रोल अदा करते हैं। कॅरियर का निर्णय करते समय मूल्य, स्वभाव, व्यक्तित्व अभिरूचि, अपनी क्षमता और बौद्धिक स्तर पर ध्यान देना होता है। अपने व्यक्तित्व और गुण–दोष के बारे में विद्यार्थी स्वयं आत्म–निरीक्षण और विश्लेषण करे। अवसरों की उम्मीद में बैठना निराशा और निरर्थकता को जन्म देने वाला साबित होता है। अतः आगे बढ़ कर अवसर को पकड़ें अथवा अवसर का सृजन करें।

विद्यार्थियों से कहें कि वे उन शक्तियों का विकास करें जो उन्हें अपने लक्ष्य को सुनिश्चित करने और पाने में सहायक सिद्ध हों।

ग्रामीण पत्रकारिता के लिए अवसरों की कमी नहीं है। लोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ के लिए कार्य करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। यह सम्मान भी दिलाता है और अपने विरोधियों को भी खड़ा करता है। लिखने से प्रसन्नता और जीवन को सार्थकता मिलती है। इसमें समाचार खोजने, विश्लेषण करने, संपादन करने, केमेरा ऑपरेट करने जैसे कार्य शामिल हैं। संक्षिप्तिकरण की कला बहुत मायने रखती है। यह मानव–सेवा के साथ ही आज अपने व्यवसायिक रूप में सामने है। हिम्मत के बिना इसमें आगे बढ़ना मुश्किल होता है। विद्यार्थी स्वयं मूल्यांकन कर देखे कि क्या वह इसमें योग्य है?

स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार से जुड़े उद्यमियों को महाविद्यालय में आमंत्रित कर उन्हें समय–समय पर विद्यार्थियों से मिलवाएं। स्थानीय स्तर पर कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करें।

मॉडल टेस्ट का आयोजन करें

विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम को बेहतर बनाने और उनमें आत्मविश्वास के संचार हेतु विश्वविद्यालयीन परीक्षा के पूर्व मॉडल टेस्ट का आयोजन करें।

उपस्थिति वृद्धि के उपाय करें

उपस्थिति वृद्धि के लिए संचार माध्यमों के जरिये विशेष प्रयासों पर ध्यान दें। लगातार अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के पालकों को पोस्टकार्ड से सूचना दें। फिर पालकों से चर्चा कर उनके

पाल्यों की प्रगति और गतिविधियों को ले कर चर्चा करें और उनसे शपथ पत्र लें ताकि वे अपने बच्चों को नियमित कक्षाओं में भेजने के लिए आनाकानी नहीं कर सकें।

सोयाबीन/गेहूं कटाई के महिनों में घटती उपस्थिति और पढ़ाई में नुकसान की भरपाई के विकल्प के बारे में सोचें

ग्रामीण अंचलों में स्थित महाविद्यालयों में अक्सर देखा गया है कि सोयाबीन/**गेहूं** कटाई के दौरान विद्यार्थियों का कक्षाओं में उपस्थिति बहुत घट जाती है। विद्यार्थियों का कक्षाओं में उपस्थित न रह पाना उनकी मजबूरी होती है। इस दौरान उन्हें रोजगार मिल जाता है जो गरीब परिवार के लिए आमदनी का बड़ा स्रोत साबित होता है। ऐसे विद्यार्थियों को पढ़ाई में होने वाले नुकसान की पूर्ति की हमारी ओर से कोशिश होना चाहिए। ऐसे विद्यार्थियों को गृहकार्य के रूप में असाइनमेंट दिए जा सकते हैं। इन्हें पूरा कराने में मदद के उद्देश्य से नियमित और ऐसे मजबूर विद्यार्थियों के बीच एक **'मोबाइल नेटवर्क'** स्थापित की जा सकती है। इसमें शिक्षक भी शामिल हो सकते हैं। सफलतापूर्वक काम करने वाले विद्यार्थियों को उपस्थिति का लाभ दिया जा सकता है।

कर्तव्य, अधिकार और जिम्मेदारियों पर विद्यार्थियों के लिए कार्यशाला करें

अधिकतर विद्यार्थी अपने अधिकारों की बात तो करते हैं लेकिन उन्हें अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों का संज्ञान नहीं होता। इसी उद्देश्य से कुछ कार्यशालाओं का आयोजन करें। इसके बाद विद्यार्थी केम्पस सफाई, आत्म अनुशासन, बिजली बचत, नव प्रवेशित विद्यार्थियों की कौंसिलिंग, फर्नीचर आदि के रखरखाव में योगदान, रक्तदान, शिक्षकों को सम्मानित करने आदि जैसे कुछ संकल्प ले सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए मौके बढ़ाएं। उन्हें संपादकीय कार्य, कार्यक्रम संचालन, नेतृत्व और समाज सेवा में आगे लाएं।

विद्यार्थियों को अपने महाविद्यालय को अग्रिम पंक्ति का महाविद्यालय बनाने का संकल्प लेने हेतु प्रोत्साहित करें। प्रेरणा ऐसी हो जिससे विद्यार्थी स्वयं अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए आगे बढ़ कर अपनी भागीदारी की ईच्छा जाहिर करें।

संदेश देने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का ही आयोजन करें

संदेश देते महाविद्यालय के प्रत्येक सांस्कृतिक कार्यक्रमों से केम्पस में अनुशासन लाने और विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य स्थापना में मदद मिलती है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के दौरान **शिक्षकों और विद्यार्थियों से बनी कार्यक्रम निरीक्षण समिति** के संतुष्ट होने के बाद ही मंच पर किसी कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण की अनुमति हो। अगर कार्यक्रम राष्ट्रप्रेम जगाने वाले, नैतिक मूल्य स्थापित करने वाले, स्वस्थ मनोरंजन करने वाले सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को प्रस्तुत कर उनके हल देने वाले हों तो अनुशासन की समस्या स्वयमेव हल हो जाती है। वैसे भी फूहड़ता का प्रदर्शन करना शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

न्यूज लेटर का प्रकाशन सुनिश्चित करें

किसी भी महाविद्यालय के अपने न्यूज लेटर का होना गर्व की बात होती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का मंच सहज ही उपलब्ध हो जाता है। साथ ही महाविद्यालय की उपलब्धियों और गतिविधियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करने में सहायता मिल जाती

है। प्रत्येक सेमेस्टर में कम से कम एक न्यूज लेटर को प्रकाशित करने का निर्णय लें। विद्यार्थियों को बारी–बारी से अवसर दें और संपादन सहयोग लें।

महाविद्यालयीन न्यूज लेटर में हिंदी और अंग्रेजी सुधार, बड़ी खबरें/सा.ज्ञा./रोजगार मार्गदर्शन, विभिन्न पुरस्कार विजेताओं के नाम, गोद लिए पौधों के हाल, खेल/अतिथि/प्रेरणा, आंतरिक मूल्यांकन के टापर्स के नाम, प्रोजेक्ट कार्य की प्रगति, फीडबैक, शिकायत/समस्या/समाधान, उपस्थिति रिकार्ड आदि को शामिल किया जा सकता है।

अकादमिक वातावरण बनाने में जनभागीदारी समिति का सहयोग लें

जन भागीदारी समिति के सहयोग से विद्यार्थियों को विभिन्न योजनाओं में भाग लेने के लिए पुरस्कार दिलवाएं तथा महाविद्यालय के बहुमुखी प्रतिभाशाली विद्यार्थी को **प्राचार्य ट्रॉफी** की घोषणा करवाएं।

सामूहिक सूर्य नमस्कार और प्राणायाम प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित करें

योग के महत्त्व को प्रतिपादित करने के लिए सामूहिक सूर्य नमस्कार और प्राणायाम के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें। अगर संभव हो तो स्वैच्छिक आधार पर योग कक्षाओं के नियमित आयोजित करने पर भी विचार करें ।

प्रतिभा बैंक का गठन करें

विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करें। इनमें भाषण देने, वादविवाद और समूह–चर्चा करने, रोल–प्ले आदि से जुड़े कौशल को विकसित करने के लिए स्थानीय विशेषज्ञों और प्रतिभाओं का सहयोग लें। इसके लिए स्थानीय प्रतिभाओं को आमंत्रित कर प्रतिभा बैंक का गठन करें। इस बैंक के सदस्यों में स्थानीय उद्योगपति, बैंकिंग से जुड़े लोग, वकील, हस्त शिल्पी, पत्रकार, शिक्षक, डाक्टर, संगीतकार, गायक, सामाजिक कार्यकर्ता आदि हो सकते हैं। ऐसा व्यवस्था हो जिससे इस बैंक के सदस्य समय–समय पर, अपनी सुविधा से और अक्सर बिना सूचना के महाविद्यालय में आ सकें और उपलब्ध विद्यार्थियों के समूहों से चर्चा कर उनकी समस्याओं को सुन कर उनका मार्गदर्शन कर सकें। इसमें पूर्व–विद्यार्थियों को भी जोड़ें।

कार्य संस्कृति का विकासः सशक्त फीडबैक सिस्टम विकसित करें

महाविद्यालय में **आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ** का गठन करें। इस का उद्देश्य महाविद्यालय में गुणवत्ता को बनाए रखने की दिशा में कदम उठाना एवं इसमें अभिवृद्धि हेतु काम करना हो।

महाविद्यालय में विद्यार्थियों, कर्मचारियों और अध्यापकों की शिकायतों को जानने और उनके सुझावों पर ध्यान देने के लिए एक प्रकोष्ठ स्थापित करें। समस्याओं के तत्काल समाधान खोजने का प्रयास करें। कोशिश यह हो कि किसी के मन में असंतोष पैदा न हो तथा समस्या का हल 'कोई नहीं हारे' (win-win) के अंदाज में हो। इसके लिए विद्यार्थी–शिक्षक, प्राचार्य–कर्मचारी और प्राचार्य–शिक्षक संवाद को बढ़ाने पर ध्यान दें।

शिक्षकों से मिलने वाले विद्यार्थियों के रिकार्ड के आधार पर जानने का प्रयास करें कि विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याएं क्या हैं और कौनसे व्यवहारिक हल संभव हैं? कक्षा से बाहर शिक्षकों की उपलब्धता को सुनिश्चित करें और हर स्तर पर विद्यार्थियों की मदद करने का प्रयास करें। इस पुनित कार्य में सभी शिक्षक जुटें और वे इसे अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझें। विद्यार्थियों को मार्गदर्शन और सलाह के साथ ही उनकी अकादमिक और आर्थिक सहायता करने पर भी विचार करें।

विद्यार्थियों, कर्मचारियों आदि से प्राचार्य स्वयं अपना फीडबैक लेने की शुरूआत करें। बाद के प्रयास ऐसे हों ताकि सभी स्वेच्छा से शामिल हो सकें। सब अपने–अपने कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से समय पर पूरा करने का संकल्प लें और अपनी दैनिक डायरी बनाएं। इसतरह स्वरूचि से अपनी अपनी जिम्मेदारियों को वहन करने से महाविद्यालय एक टीम के रूप में नजर आने लगेगी। सतत मॉनिटरिंग की व्यवस्था करें, लेकिन विश्वास के वातावरण को बिगड़ने नहीं दें। सेमेस्टर–अंत में शुरू की गई प्रत्येक योजना की समीक्षा कर आगे की दिशा तय करें। आवश्यक हो तो क्रियांवयन के तरीकों में बदलाव करें ताकि योजनाओं के अपेक्षित लाभ मिल सकें।

प्राचार्य का अहम् रोल

अपनी संस्था में गुणवत्ता लाने और उसका प्रबंधन करने में में प्रचार्य की अहम् भूमिका है। इसके लिए प्राचार्य मेनेजर की नहीं लीडर की भूमिका में आएं। प्राचार्य प्रशासन चलाते समय मानवीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखें और सबको साथ लेकर तथा सबके आत्म–सम्मान की रक्षा करते हुए कदम उठाएं। महाविद्यालय का संचालन इस तरह हो कि किसी के भी आत्म–सम्मान को ठेस न पहुँचे। कार्य आवंटन करते समय सबकी रूचियों का ध्यान रखें ताकि व्यक्ति दिल से जुड़ सकें।

महाविद्यालयों में प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक की कमी है। इसकी पूर्ति हेतु अतिथि विद्वानों की शासन की ओर से व्यवस्था की गई है। जनभागीदारी समिति के माध्यम से भी इसकी पूर्ति हो रही है। अध्यापन कार्य में सभी लोगों के समान जिम्मेदारी है। प्राचार्य को चाहिए कि शिक्षकों में किसी भी प्रकार का भेदभाव न करते हुए उनकी सेवाऐं महाविद्यालय के हित में और गुणात्मक के विकास में लें। प्राचार्य और नियमित प्राध्यापक/सहायक प्राध्यापक अतिथि विद्वानों को अभिप्रेरित करते हुए उनका उन्मुखीकरण और मार्गदर्शन करें।

सांस्कृतिक व खेल गतिविधियों का नियमित संचालन हो। इसके लिए सप्ताह में एक दिन काल–खण्ड की अवधि कम करके वर्ष भर के लिए योजनाऐं बनाई जा सकती हैं। योजना में उन गतिविधियों पर विशेष ध्यान दें, जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थी उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की क्षमता रखते हों।

(डॉ. वी एस निरंजन)
आयुक्त
उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा म0प्र0, गुणवत्ता वर्ष 2011–12, विस्तृत दिशानिर्देश Page No 8